चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय चतुर्थ
प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना -

शोधकर्ता द्वारा प्रथम अध्याय में प्रस्तुत अध्ययन से परिचित कराया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व के बारे में बताया गया है। समस्या कथन के आधार पर शोध उद्देश्य एवं परिकल्पना का निर्माण किया गया है। शोध उद्देश्य एवं परिकल्पना के आधार पर समस्या का सीमांकन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में समस्या से संबंधित ज्यादा से ज्यादा जानकारी एकत्रित करने के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन किया गया है।

समस्या कथन के उद्देश्य, परिकल्पना का निर्माण, शोध का सीमांकन तथा साहित्य का पुनरावलोकन करने के पश्चात् परिकल्पना परीक्षण के लिए न्यादर्श, न्यादर्श चयन, प्रदत्तों के संकलन की प्रविधि एवं उपकरण तथा प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय के बारे में तृतीय अध्याय में बताया गया है।

चतुर्थ अध्याय में प्रदतों का विश्लेषण करना है। चयनित न्यादर्श पर विभिन्न उपकरणों के संचालन से प्राप्त प्रदत्त रुक्ष होते है। प्रदत्तों को अर्थपूर्ण बनाने, परिणाम निकालने व वैद्य व्यापीकरण के लिए इनका सारणीयन, व्यवस्थापन, विश्लेषण एवं व्याख्या करने की आवश्यकता होती है। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए शोधकर्ता न्यादर्श में निहित तथ्यों को निश्चित करने के लिए सामग्री का सारणीयन कर अध्ययन करता है।

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये प्रदत्तों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है।

तालिका-4.1

गणित विषय में रुचि के प्राप्तांक का विस्तार

प्राप्तांक का विस्तार	विद्यार्थी की संख्या	स्तर
33-40	17	अधिक
27-32	28	औसत से अधिक
21-26	40	औसत
15-20	13	औसत से कम
0-14	2	कम

गणित विषय में रुचि परीक्षण में कुल 100 विद्यार्थियों में से 2 प्रतिशत कम, 13 प्रतिशत औसत से कम, 40 प्रतिशत औसत, 28 प्रतिशत औसत से अधिक तथा 17 प्रतिशत ने अधिक रुचि की श्रेणी प्राप्त की है।

तालिका-4.2

गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांक का विस्तार

प्राप्तांक का विस्तार	विद्यार्थी की संख्या	स्तर
81-100	3	अधिक
71-80	16	औसत से अधिक
56-70	52	औसत
41-55	27	औसत से कम
0-40	2	कम

गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धिमें कुल 100 विद्यार्थियों में से 2 प्रतिशत कम, 27 प्रतिशत औसत से कम, 52 प्रतिशत औसत, 16 प्रतिशत औसत से अधिक तथा 3 प्रतिशत ने अधिक शैक्षिक उपलब्धि की श्रेणी प्राप्त की है।

तालिका-4.3

गणित विषय में **रुचि** तथा गणित विषय में **शैक्षिक उपलब्धि** के मध्य **सहसंबंध**-

चर	संख्या	मध्यमान	सहसंबंध
गणित विषय में रुचि	100	26.09	r = 0.6134
गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि	100	61.46	

परिकल्पना परीक्षण हेतु प्राप्त गणित विषय में रुचि के प्राप्तांको तथा गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांको के मध्य सहसंबंध कार्ल पियर्सन की प्रोडक्ट मूमेण्ट मेथड का प्रयोग कर प्राप्त किया गया है। गणित विषय में रुचि तथा गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध r = 0.6134 प्राप्त हुआ है। जो .05 स्तर पर सार्थक है। r = 0.6134 मध्यम धनात्मक सहसंबंध है अर्थात् यदि गणित विषय में रुचि अधिक है तो गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होगी।

D – 425

ग्राफ-4.1

गणित विषय में **रुचि** तथा गणित विषय में **शैक्षिक उपलब्धि** के मध्य सहसंबंध का ग्राफ पर प्रदर्शन-

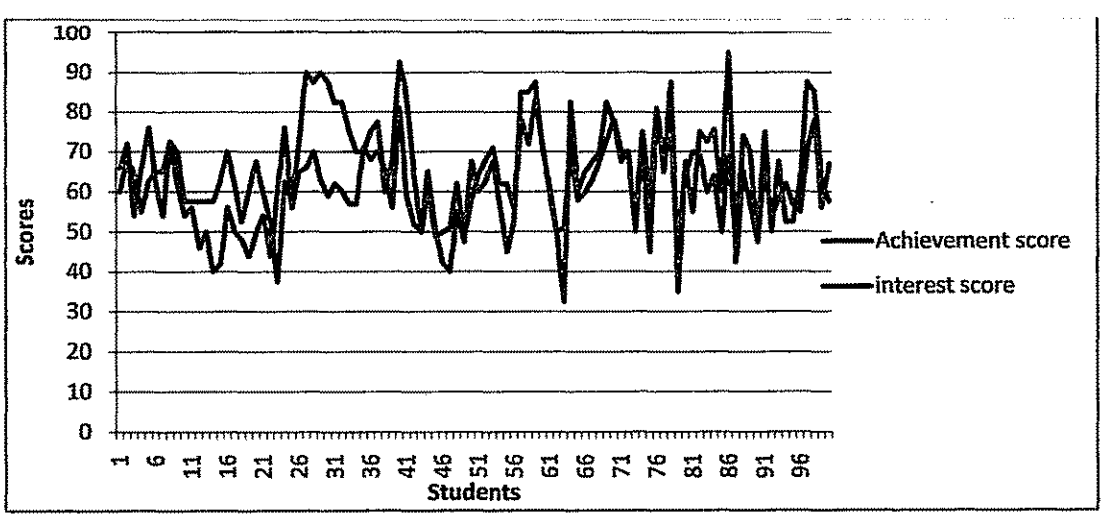

प्रस्तुत ग्राफ में गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि तथा गणित विषय में रुचि के मध्य सहसंबंध दिखाया गया है। ग्राफ से पता चल रहा है कि गणित की रुचि बढ़ने पर गणित में शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ रही है तथा गणित की रुचि घटने पर गणित में शैक्षिक उपलब्धि भी घट रही है।

4.3 निष्कर्ष-

प्रदत्तों के विश्लेषण करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि गणित विषय में रुचि तथा गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य **मध्यम धनात्मक सहसंबंध** है अर्थात् विद्यार्थी की गणित विषय में रुचि जितनी अधिक होगी उसकी गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि भी उतनी अधिक होगी। अत: शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों में गणित विषय के प्रति रुचि को बढ़ाये जिससे गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सके।